हिन्दी साहित्य

HINDI LITERATURE

DTVF/17–HL-**HL8**

निर्धारित समय: तीन घंटे
Time allowed: Three Hours

अधिकतम अंक: 250
Maximum Marks: 250

नाम (Name): DIPTI DEO

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? | हाँ | ✓ | नहीं | |

मोबाइल नं. (Mobile No.):

ई-मेल पता (E-mail address):

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): 08|10|2017

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2017] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2017]:

0	0	9	7	4	8	6

विद्यार्थी के हस्ताक्षर (Student's Signature): [signature]

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instructions carefully before attempting questions:

*There are **Five** questions.*

*Candidate has to attempt all **FIVE** questions.*

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

*Answers must be written in **HINDI** (Devanagari Script).*

Word limit in questions, if specified, should be adhered to.

Any page or portion of the page left blank in the Question-cum- Answer book must be clearly struck off.

Attempts of questions shall be counted in chronological order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly.

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): 123½ टिप्पणी (Remarks):

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

1. निम्नलिखित काव्यांशों की संदर्भ-सहित व्याख्या (लगभग 150 शब्दों में) प्रस्तुत करते हुए उनके काव्य-सौंदर्य का परिचय दीजिये: $10 \times 5 = 50$

(क) सतगुरु की महिमा अनँत, अनँत किया उपगार।
लोचन अनँत उघारिया, अनँत दिखावनहार।।

संदर्भ व प्रसंग: उपरोक्त काव्यांश निर्गुण भक्ति काव्यधारा के संत कवि 'कबीरदास' की वाणी के संकलन 'कबीर ग्रंथावली' के सत्गुरु कौ अंग' से लिया गया है। इन पंक्तियों में कबीरदास सत्गुरु के महत्व को बतला रहे हैं।

व्याख्या: उनका मानना है कि मनुष्य या जीव के समक्ष जो माया का आवरण है उसे सत्गुरु हटाकर ब्रह्म के उस अनंत रूप का साक्षात्कार करता है, जिसका जीव अंश है। सत्गुरु के इस असीम उपकार के ही कारण सत्गुरु का महत्व असीम एवं अतुलनीय है।

~~काव्यगत~~ भावगत सौंदर्य:

1. भारतीय परम्परा में सत्गुरु का महत्व ब्रह्म के ही समान है। अन्यत्र कबीरदास जी ने ही कहा है
'गुरु गोविन्द दोऊ खड़े काके लागो पाँव'

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

2. सूफी परम्परा में भी गुरु का महत्व अनंत है।
जायसी ने कहा है -
'गुरु सुआ जेहि पंथ दिखावा।
बिनु गुरु जगत को निर्गुन पावा'

3. कबीर निराकार ब्रह्म के उपासक हैं।
अनंत स्वरूप इसी कारण है। शंकर के अद्वैतवाद का प्रभाव यहाँ परिलक्षित होता है।

काव्यगत सौंदर्य :

1. भाषा सधुक्कड़ी - तत्सम-तद्भव सभी शब्द (लोचन, अनँत, उपगार।

2. छंद - दोहा

3. उपमा - ब्रह्म को अनंत की उपमा

4-

8/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) काहे को रोकत मारग सूधो?
सुनहु मधुप! निर्गुन-कंटक तें राजपंथ क्यो रुँधो?
कै तुम सिखै पठाए कुब्जा, कै कही स्यामघन जू धौं।
बेद पुरान स्मृति सब ढूँढ़ौ, जुवतिन जोग कहूं धौं?
ताको कहा परेखो कीजै जानत छाछ न दूधो।
सूर मूर अक्रूर गए लै ब्याज निबेरत उधो।।

संदर्भ: प्रस्तुत पद प्रेम एवं वात्सल्य के सफलतम कवि 'सूरदास' की रचना 'सूरसागर' के 'भ्रमरगीत प्रसंग' से ~~ली~~ लिया गयी है।

प्रसंग व व्याख्या: इन पंक्तियों में सूर की गोपियाँ उद्धव के शुष्क ज्ञान मार्ग के समक्ष अपने प्रेम के पक्ष में तर्क दे रही हैं। वे कहती हैं प्रेम का पथ अत्यंत सरल एवं सीधा है। हे उद्धव! तुम इसे ज्ञान के कंटकों से भरे अवरोधों से क्यों रोक रहे हो। वेद पुराण एवं शास्त्रों में कहीं भी युवतियों के लिए योग मार्ग कहीं है क्या? वे पूछती हैं कि यह उपाय कुब्जा ने बताया है या स्वयं घनश्याम ने? वे उलाहना देती है कि अक्रूर ~~ने~~ उनके प्रिय श्रीकृष्ण को तो ले ही गये अब उनके प्रति

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

प्रेम को भी समाप्त करना चाहते हैं।

भावगत सौंदर्य:

1. निर्गुण - सगुण द्वन्द्व में निर्गुण मार्ग की शुष्कता एवं सगुण की सरसता का तर्कपूर्ण विश्लेषण है।
2. गोपियों के तर्क उनके प्रेमप्रसूत अन्तर्वृत्तियों से निकले हैं।
3. तुलसी दास जी भी सगुण राम के उपासक हैं। वे कहते हैं--
   'अगुणहिं सगुणहिं नहि कछु भेदा।

काव्यगत सौंदर्य:

1. वक्रोक्तियाँ दृष्टिगोचर हैं। (निर्गुण कंत)
2. ब्रज की इसी मिठास के लिए आचार्य शुक्ल ने कहा था कि 'सूर का नाम बराबर लिया जाएगा।'
3. उपमेय-उपमान विधान अर्थ की प्रभाविता को बढ़ा रहा है।
   'मूर एवं ब्याज'
4. पद में गेयता एवं संगीतात्मकता है।

6/16

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright - Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ग) कहत, नटत, रीझत, खिझत, मिलत, खिलत, लजियात।
भरे भौन में करत हैं, नैननु ही सों बात।।

संदर्भ : दी गयीं पंक्तियाँ रीतिकाल के 'रीतिकाव्य धारा' के अमिट हस्ताक्षर कविवर 'बिहारीलाल' की रचना 'बिहारी सतसई' से ली गयीं हैं।

प्रसंग व व्याख्या : इन पंक्तियों में कवि प्रेमी-युगल के हाव-भाव का वर्णन कर रहा है। भरे सभा-भवन में मध्यवर्गीय नायक- नायिका अवाचिक संवाद कर रहे हैं। नायक अपने इशारे से कुछ कहता है तो नायिका उस पर नराज होती है। नायिका के इस हाव पर नायक रीझ जाता है तो पुनः नायिका उस पर और नराज होकर खीझती है। इतने में उनके नयन आपस में मिलते हैं और नायक प्रसन्न हो जाता है और नायिका शर्मा जाती है।

इस प्रकार भरे सभा भवन में युगल अपने नयनों के माध्यम से संवाद कर लेते हैं।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

भावगत सौंदर्य :

1. मध्यवर्गीय नायक - नायिका को सामाजिक दबावों के समक्ष प्रेम में किस प्रकार अपनी इच्छाओं को दबाना पड़ता है इसका प्रमाणिक दस्तावेज है। किन्तु इन परिस्थितियों के बावजूद प्रेमी - प्रेमिका अवसर जुटा लेते हो

2. प्रेम का शाश्वत ~~का~~ और कठिन मूल्य कबीर दास के यहाँ भी व्यक्त हुआ है
"प्रेम पहाड़ कठिन विधि गढ़ा
सो पे चढे सो सीस सो चढ़ा।"

शिल्पगत सौंदर्य :

1. बिहारी की समूची काव्य रचना अनुभवों की रचना है। इन पंक्तियों मे भी अनुभावों का कुशल चित्रण है

2. बिंब के कुशल निर्माता का प्रमाण है।

3. बिंबों की शृंखला के माध्यम से दोहे को पढ़ना एक चलचित्र को देखने के समान है

4. ब्रज का चरम कलात्मक विकास

5. इद - दोहा - गागर में सागर की भांति

6/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) भू-लोक का गौरव, प्रकृति का पुण्य लीला-स्थल कहाँ?
फैला मनोहर गिरि हिमालय और गंगाजल जहाँ।
सम्पूर्ण देशों से अधिक किस देश का उत्कर्ष है?
उसका कि जो ऋषिभूमि है, वह कौन? भारतवर्ष है।।

संदर्भ : प्रस्तुत पंक्तियाँ राष्ट्रकवि 'मैथिली शरण गुप्त' की राष्ट्रीय उद्बोधन की रचना 'भारत- भारती से ली गयी है।

प्रसंग व व्याख्या : गुप्त जी रचना के 'अतीत खंड' में भारत की सांस्कृतिक एवं भौगोलिक विशेषताओं के आधार पर उसे इस जगत मे सर्वश्रेष्ठ सिद्ध कर रहे हैं। वे कहते हैं कि ऊँचे हिमालय एव पवित्र गंगा के कारण भारतवर्ष प्रकृति की अद्भुत छटा के कारण इस लोक का गौरव है। भारत ऋषि-मुनियों की भूमि है और उसका संस्कृतिक उत्कर्ष अत्यंत उच्च स्तर पर है।

भावगत सौंदर्य :

1. भारत - भारती नवजागरण का काव्य है। इन पंक्तियों के माध्यम से अतीत

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

के गौरव के आधार पर सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की स्थापना का प्रयास है।

2- तत्कालीन भारत में अंग्रेजी सभ्यता के समक्ष हीन भाव से खड़े भारतीय को अपने राष्ट्र के प्रति सम्मान तथा गौरव का भाव उत्पन्न करने का प्रयास है।

3- उपयोगितावादी इतिहास बोध दृष्टिगोचर होता है।

शिल्पगत सौंदर्य:

1. द्विवेदी युग में खड़ी-बोली काव्यभाषा के रूप में प्रतिष्ठित हो चुकी थी। खड़ी बोली की भाषिक क्षमता का परिचय इन पंक्तियों में दिखता है।

2. इतिवृतात्मकता, अभिधात्मकता तथा गद्यात्मकता इन पंक्तियों में देखी जा सकती है।

3. भाषा तत्सम प्रधान है।

4. तुकान्तता एवं लयात्मकता भी है।

6/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) है अमानिशा, उगलता गगन घन अंधकार
खो रहा दिशा का ज्ञान, स्तब्ध है पवन चार,
अप्रतिहत गरज रहा पीछे अम्बुधि विशाल
भू-धर ज्यों ध्यान-मग्न, केवल जलती मशाल।

संदर्भ: उपरोक्त काव्यांश छायावादी कवि सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' की शक्ति काव्य के उत्स 'राम की शक्ति पूजा' से ली गयी है।

प्रसंग व व्याख्या: ये पंक्तियाँ भानु सभा के समय की हैं जब राम युद्ध से लौट-कर गत युद्ध की समीक्षा व आगे की रणनीति तय कर रहे हैं।

निराला प्रकृति को चित्रित करते हुए कहते हैं कि घनघोर अंधकार जो अमावस के कारण आकाश से उतर रहा है, ऐसे में दिशाओं का ज्ञान भी नहीं हो पा रहा तथा पवन वेग अत्यंत क्षीण है। विशाल समुद्र अपनी लहरों से दहाड़ रहा है तथा ऐसे परिवेश में राम एक स्थिर पर्वत की भाँति बैठे हैं तथा एक प्रकाश-पुंज

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

भी है।

भावगत सौंदर्य :

1. निराला राम की मनः स्थिति को चित्रित कर रहे हैं।
2. कठोर परिस्थितियों को दिखाने के लिए प्रकृति के कठोर चित्रों को खींचा गया है।
3. राम को आशा की एक किरण के रूप में प्रस्तुत करने के लिए उन्हें 'भूधर' एवं 'जलती मशाल' की उपमा दी गयी है।

शिल्पगत सौंदर्य :

1. प्रकृति का विराट एवं कठोर बिंब प्रस्तुत किया गया है इसी प्रकार के बिंब मुक्तिबोध के यहाँ भी मिलते हैं।
2. खड़ी बोली की भाविक समता का परिचय मिलता है।
3. भाषा तत्सम (अमानिशा, अप्रतिहत...) है।
4. उपमा अलंकार (भूधर ज्यों ध्यान मग्न)

6/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

2. निम्नलिखित काव्यांशों की संदर्भ-सहित व्याख्या (लगभग 150 शब्दों में) प्रस्तुत करते हुए उनके काव्य-सौंदर्य का परिचय दीजियेः 10 × 5 = 50

(क) पीछै लागा जाई था, लोक वेद के साथि,
आगे तैं सतगुर मिल्या, दीपक दीया हाथि॥

संदर्भ: उपरोक्त पंक्तियाँ कबीरदास जी की वाणी के संकलन कबीर ग्रंथावली के 'सद्गुरु को अंग' से ली गयी है।

प्रसंग व व्याख्या: इन पंक्तियों में कवि सत्गुरु के महत्व को बतलाते हुए कहता है कि अज्ञानतावश वह लोक परम्पराओं व बाह्य आडम्बरों के माध्यम से ब्रह्म की उपलब्धि चाहता था। किन्तु. ऐसे में उसे सतगुरु मिले जो ज्ञान रूपी दीपक हमें दिये और इसी के माध्यम से ब्रह्म की उपलब्धि संभव है।

भावगत सौंदर्य:

1. लोक-वेद की निरर्थकता को सिद्ध किया गया है।
2. कबीर आरंभ में हठयोग से प्रभावित थे इसे भी खंडित किया गया है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

वे अन्यत पूछते है
"गगना पवना दोनो बिले
कहँ गया जोग तुम्हारा।"

३. सत्गुरु के महत्व को स्थापित किया गया है। भारतीय परम्परा में सत्गुरु का महत्व है। सूफी परम्परा मे भी जायसी कहते हैं-
बिन गुरु जगत को निर्गुण पावा'

शिल्पगत सौंदर्य :

1. भाषा पंचमेल खिचड़ी (मिथ्या-परिखी)
2. छंद - दोहा
3. अप्रस्तुत योजना - दीपक (ज्ञान को)

6/14

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) चढ़ा असाढ़ गँगन घन गाजा। साजा बिरह दुंद दल बाजा।
धूम स्याम धौरे घन धाए। सेत धुजा बगु पाँति देखाए।
खरग बीज चमकै चहुँ ओरा। बुंद बान बरिसै घन घोरा।
अद्रा लाग बीज भुइँ लेई। मोहि पिय बिनु को आदर देई।

संदर्भ: प्रस्तुत पंक्तियाँ प्रेम मार्ग के पथिक सूफी कवि मलिक मुहम्मद जायसी की रचना 'पद्‌मावत' के नागमती वियोग खण्ड से ली गयी है।

प्रसंग व व्याख्या: इन पंक्तियों में जायसी रत्नसेन के सिंहल द्वीप चले जाने से नागमती के विरह का आषाढ़ मास एवं आर्द्रा नक्षत्र की परिस्थितियो में वर्णन कर रहे है।

जायसी कहते हैं कि आषाढ़ मास आ गया है और आकाश में काले बादल छा गये है और विरह का दल बढ़ रहा है। प्रकृति के विभिन्न तत्व विरह के दल को और बढ़ा रहे है बगुले, वर्षा की बूदे इत्यादि बाण की भाँति लग रहे है।

नागमती कहती है कि ऐसी विकट परिस्थिति मे उसका आदर कौन होगा।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

भावगत सौंदर्य :

1. नागमती एक साधारण नारी की भाँति विरह का दंश झेल रही है इस साधारणीकरण के कारण ही शुक्ल जी ने इसे 'हिन्दू नारी की व्यथा-कथा' कहा था।
2. प्रकृति के विभिन्न तत्व उद्दीपन विभाव के रूप में आये है
3. जायसी को लोकतत्व का गहरा ज्ञान था। अवध क्षेत्र के पशु-पक्षी पद्मावत में गिनाए गये है इन पंक्तियों में वगुलों का वर्णन है

शिल्पगत सौंदर्य :

1. अवधी की इसी 'बेमेल एवं खालिस मिठास' के लिए शुक्ल जी ने जायसी के नाम को बराबर लिए जाने की घोषणा की थी।
2. काव्य रूढि बारहमासा वर्णन का
3. उपमेय उपमान विधान (वर्धमान) प्रयोग

6/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) जिसे तुम समझे हो अभिशाप, जगत की ज्वालाओं का मूल-
ईश का वह रहस्य वरदान, कभी मत इसको जाओ भूल।
विषमता की पीड़ा से व्यस्त हो रहा स्पंदित विश्व महान,
यही दुख-सुख, विकास का सत्य यही भूमा का मधुमय दान।

संदर्भ: दिया गया काव्यांश छायावादी कवि 'जयशंकर प्रसाद' के आधुनिक युग एक एकमात्र भावप्रधान महाकाव्य कामायनी के श्रद्धा सर्ग से लिया गया है।

प्रसंग एवं व्याख्या: इन पंक्तियों में श्रद्धा मनु को कर्मवाद की प्रेरणा दे रही है। वह कहती है कि जगत आज इच्छा ज्ञान व क्रिया के मध्य विषमता की पीड़ा से विकल है। इस विषमता से निकलना ही परम लक्ष्य है तथा यही विकास का उद्देश्य भी है। यदि तुम इसे अभिशाप समझते हो तो यह तुम्हारी भूल है। यह जगत ईश्वर का वरदान है तथा इसे बेहतर बनाना ही मनुष्य का कर्तव्य है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

भावगत सौंदर्य:

1. प्रसाद जगत की समस्या को 'विषमता' के रूप में पकड़ते हैं। यह विषमता इच्छा-ज्ञान व क्रिया के मध्य समन्वय के न होने की है। यही भाव मुक्तिबोध के यहाँ भी दिखता है। ब्रह्मराक्षस 'तर्क-ज्ञान व कार्य सामञ्जस्य योजन' समस्या से ग्रस्त है।

2. प्रसाद का दर्शन प्रत्यभिज्ञा दर्शन है इन पंक्तियों मे परिलक्षित होता है।

3. कर्मवाद की भी प्रेरणा इसमे है। जगत की वास्तविकता अरविन्दो इत्यादि नव्य वेदान्ती भी मानते हैं।

शिल्पगत सौंदर्य:

1. खड़ी बोली की तत्सम प्रवृति (विषमता, भूमा, मधुमय)
2. तुकान्तता के साथ लयात्मकता
3. प्रसाद छंदो की सीमा से बंधी कविता करते है।

6/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
दृष्टि The Vision
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) हरि हैं राजनीति पढ़ि आए।
समुझी बात कहत मधुकर जो? समाचार कछु पाए?
इक अति चतुर हुते पहिले ही, अरु करि नेह दिखाए।
जानी बुद्धि बड़ी, जुवतिन को जोग-सँदेस पठाए।।
भले लोग आगे के, सखि री ! परहित डोलत धाए।
वे अपने मन केरि पाइए जे हैं चलत चुराए।।
ते क्यों नीति करत आपुन जे औरनि रीति छुड़ाए?
राजधर्म सब भए सूर जहँ प्रजा न जायँ सताए।।

संदर्भ: प्रस्तुत काव्यांश महाकवि सूरदास की रचना 'सूरसागर' के भ्रमरगीत प्रसंग से ली गयी है।

प्रसंग व व्याख्या: इन पंक्तियों में गोपियाँ उद्धव के माध्यम से कृष्ण को उलाहना दे रही हैं। वे कहती हैं कि उनके प्रिय कृष्ण अब राजनीति के दाँव-पेच हम पर चला रहे हैं। एक तो वे पहले से ही चतुर थे और इससे वे हमसे नेह (प्रेम) का लिए। अब वे हमें योग का संदेश भेज रहे हैं। यह कौन सी नीति है जो अपने लक्ष्यों को प्राप्त कर लेने के बाद दूसरों को उनके मार्ग से भटकाती है।

राजधर्म तो वही है जहाँ प्रजा

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

सतायी न जाए।

भावगत सौंदर्य:

1. राजनीति पर कठोर प्रहार है।
2. व्यंग्य के माध्यम से योग मार्ग की नीरसता को सिद्ध किया गया है
3. राजधर्म की यही शिक्षा तुलसी दास भी देते है।

जासु राज प्रिय प्रजा दुखारी
सो नृप अवस नर्क अधिकारी।'

शिल्पगत सौंदर्य:

1. ब्रजभाषा का आरंभिक प्रयोग होते हुए भी सूर की भाषा चरम कलात्मकता धारण किए हुए है
2. व्यंग्य शैली -(अपने मन के ...
3. पद में गेयता के साथ संगीतात्मकता भी है।

4/10

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) शत घूर्णावर्त, तरंग- भंग उठते पहाड़,
जल राशि-राशि जल पर चढ़ता खाता पछाड़,
तोड़ता बन्ध-प्रतिसंध धरा, हो स्फीत-वक्ष
दिग्विजय-अर्थ प्रतिपल समर्थ बढ़ता समक्ष।

संदर्भ: दिया गया काव्यांश महाप्राण कवि 'सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला' की लम्बी प्रगीतात्मक कविता 'राम की शक्ति-पूजा' से लिया गया है।

प्रसंग व व्याख्या: इन पंक्तियों मे हनुमान का शक्ति से लड़ने के लिए बढ़ने का वर्णन है। निराला लिखते हैं कि हनुमान शक्ति से लड़ने को जब उद्धत होते हैं तो उनका वक्ष चौड़ा हो जाता है। वे इस इस प्रकार उठते हैं जैसे कोई पर्वत तरंगों को भंग करने को जा रहा हो। सागर की तरंगे जैसे एक दूसरे पर वार करती हैं उसी वेग एवं भार से हनुमान चलते है। हनुमान के मन में दिग्विजय की आकांक्षा है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

भावगत सौंदर्य :

1. वीरता का वर्णन है।

2.

शिल्पगत सौंदर्य :

1. भावानुकूल ध्वनि योजना निराला के काव्य में दृष्टिगोचर है। 'ध्वनि मैत्री' का अप्रतिम उदाहरण है।

2. चित्र बिंबो का सृजन निराला करते हैं 'जल राशि - राशि जल पर' (दृश्य बिंब)

3. खड़ी बोली की भाषिक क्षमता का परिचय

4. कठोर ध्वनियो (स, द, ज, घ) के माध्यम से कठोर भावों की अभिव्यक्ति।

6/16

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

3. निम्नलिखित काव्यांशों की संदर्भ-सहित व्याख्या (लगभग 150 शब्दों में) प्रस्तुत करते हुए उनके काव्य-सौंदर्य का परिचय दीजिये: 10 × 5 = 50

(क) नैना नीझर लाइया, रहट बहै निस जाम।
पपीहा ज्यूँ पिव पिव करौं, कब रु मिलहुगे राम।।

संदर्भ: उपरोक्त पंक्तियाँ निर्गुण काव्य की संत धारा के कवि कबीरदास की वाणी के संकलन कबीर ग्रंथावली के 'बिरह को अंग' से ली गयी है।

प्रसंग एवं व्याख्या: इन पंक्तियों में कबीर राम (ब्रह्म) के विरह में तड़प रहे हैं। वे कहते हैं कि नैन हमारे झरनों की भाँति अनवरत बह रहे हैं। इन नयनों से रहट की भाँति अश्रुजल बह रहे हैं। जीभ पपीहे पक्षी की भाँति निस-दिन राम का नाम जप रही है। हे प्रभु! बताओ हमें आपके दर्शन कब होंगे?

भावगत सौंदर्य:

1. कबीर राम का नाम तो लेते हैं किन्तु यह राम तुलसी की भाँति

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

सगुण नहीं है बल्कि निर्गुण व निराकार है।

2. प्रेम के विरह पक्ष का वर्णन है।

3. अन्यत्र कबीर राम के विरह मे कहते है

'अंखड़ियां झांई पड़ी जीभड़ियाँ छाला पड़ा।

4. तुलसी भी राम से 'विनय पत्रिका' में इसी निवेदन भाव मे आ गये है।

काव्यगत सौंदर्य:

1. भाषा सधुक्कड़ी है (खड़ी। पश्चिमी प्रभाव)

2. दृश्य एवं श्रव बिंब (नैना नीझर पपिहों ज्यों पिउ-पिउ)

3. उपमेय उपमान विधान - (पपिहा ज्यों)

6/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) न्यायोचित सुख सुलभ नहीं
जब तक मानव-मानव को,
चैन कहाँ धरती पर, तब तक
शान्ति कहाँ इस भव को?
"जब तक मनुज-मनुज का यह
सुख-भाग नहीं सम होगा,
शमित न होगा कोलाहल,
संघर्ष नहीं कम होगा।

संदर्भ: प्रस्तुत काव्यांश राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर की युद्ध दर्शन पर लिखी गयी कालजयी कृति कुरुक्षेत्र से ली गयी है।

प्रसंग एवं व्याख्या: इन पंक्तियों में पृथ्वी पर युद्ध एवं अशांति के कारणों की पड़ताल की गयी है। दिनकर कहते हैं कि जब तक सभी मनुष्यों के मध्य न्याय के आधार पर एक समतापूर्ण व्यवस्था स्थापित न कर दी जाए, इस धरती पर संघर्ष एवं युद्ध जैसी परिस्थितियाँ समाप्त नहीं की जा सकती।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

सौंदर्य :

1. न्याय के विरोधमूलक स्वरूप की स्थापना की मांग की गयी है।
2. संघर्ष एवं युद्ध के कारण के रूप में 'अन्याय' को आधार माना गया है।
3. मार्क्सवादी दर्शन का प्रभाव है जहाँ एक समतापूर्ण समाज की स्थापना का लक्ष्य है वहीं दूसरी ओर इसके लिए संघर्ष (वर्ग संघर्ष) की वकालत की गयी है।
4. भाषा- तत्समी प्रधान (संघर्ष, न्यायोचित) किन्तु कुछ तद्भव शब्द भी (मनुज)
5. तुकान्तता के साथ लयात्मकता
6. ओजगुण का प्राधान्य

6/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) बिलग जनि मानहु, ऊधो प्यारे!
वह मथुरा काजर की कोठरि जे आवहिं ते कारे।।
तुम कारे, सुफलकसुत कारे, कारे मधुप भँवारे।
तिनके संग अधिक छबि उपजत, कमलनैन मनिआरे।।
मानहु नील माट तें काढ़े लै जमुना ज्यों पखारे।
ता गुन स्याम भई कालिंदी सूर स्याम गुन न्यारे।।

संदर्भ: प्रस्तुत पद महाकवि सूरदास की रचना सूरसागर के 'भ्रमरगीतसार' से ~~ली गयी~~ लिया गया है।

प्रसंग एवं व्याख्या: इन पंक्तियों में गोपियाँ उद्धव को उलाहना दे रही हैं। वे कहती हैं हे उद्धव सुनो! वह मथुरा बुराइयों की खान है। वहाँ से जो भी आता है यहाँ से कुछ न कुछ हमारा छीन ले जाता है। तुम, सुफलक सुत सभी भौंरे काले हो। हमारे प्रिय कमलनयन कृष्ण तुम लोगों के साथ बुरे हो गये हैं। ऐसा लगता है कि यमुना की काली मिट्टी से सभी को काला कर दिया गया है।
इन सभी के प्रभाव से

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

यमुना भी काली हो गयी है।

सौंदर्य :

1. उपालंभ काव्य का अप्रतिम उदाहरण है।
2. गोपियों की प्रेम प्रसूत अंतर्वृत्तियों से उत्पन्न तर्क के आगे उद्धव निरुत्तर हो गये हैं।
3. वक्रोक्तियाँ हृदयस्पर्शी हैं।
4. उपमेय-उपमान विधान (मानहु नील मार...) अर्थ की प्रभावशीलता को बढ़ा रहा है।
5. ब्रज की चरम कलात्मकता द्रष्टव्य है।
6. पद में गेयता के साथ संगीतात्मकता है।

6/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(घ) जौ रोऊ तौ बल घटै, हँसौं तौ राम रिसाइ।
मनही माँहि बिसूरणां, ज्यूँ घुँण काठहि खाइ।।

संदर्भ: प्रस्तुत दोहा 'कबीर ग्रंथावली' के 'विरह को अंग' से लिया गया है।

प्रसंग व व्याख्या: कबीरदास अपने गहरे अन्तर्द्वन्द्व से ग्रस्त हो कर कहते हैं कि यदि हम सांसारिकता में रत होकर भौतिक सुखों की ओर प्रवृत्त होते हैं तो राम दूर हो जाते हैं। और, वहीं दूसरी ओर, यदि इस सांसारिकता से दूर होते हैं तो यह एक कष्ट साध्य प्रक्रिया है। इस प्रवृत्ति और निवृत्ति के मध्य मन राम के सुमिरन का निर्णय करता है तथा ब्रह्म को उपलब्ध न कर पाने की पीड़ा वैसी ही है जैसे घुन अन्दर से लकड़ी को खाता जाता है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

सौंदर्य:

1. निर्गुण ब्रह्म की उपासना का तर्क दिया गया है।

2. रोने और हँसने के प्रतीक के माध्यम से प्रवृत्ति एवं निवृत्ति का द्वन्द्व दिखाया गया है।

3. भाषा - सधुक्कड़ी (विस्तरण - पश्चिमी प्रभाव)

4. छंद दोहा

5.

6/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) श्रेय नहीं कुछ मेरा,
मैं तो डूब गया था स्वयं शून्य में–
वीणा के माध्यम से अपने को मैंने,
सब-कुछ को सौंप दिया था–
सुना आप ने जो वह मेरा नहीं,
न वीणा का था:
वह तो सब-कुछ की तथता थी
महाशून्य
वह महामौन
अविभाज्य, अनाप्त, अद्रवित, अप्रमेय
जो शब्दहीन
सब में गाता है।

संदर्भ: उपरोक्त पंक्तियाँ प्रयोगवादी कवि सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन अज्ञेय की रचना 'असाध्य वीणा' से ली गयी है।

प्रसंग व व्याख्या: इन पंक्तियों में प्रियंवद अपनी साधना प्रक्रिया की व्याख्या कर रहा है। वह कहता है कि वीणा को बजाने में मेरा कोई श्रेय नहीं। मैं तो उस परमतत्व में वीणा के माध्यम से विलीन हो गया था और वीणा की ध्वनि न तो मेरे द्वारा उत्पन्न की गयी न ही वीणा के द्वारा। यह

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

हवाने उस परमतत्व का शब्द था जो सभी प्राणियो एव चर-अचर मे व्याप्त है।

सौंदर्य:-

1. ब्रहम के अखण्ड स्वरूप की व्याख्या की गयी है
2. सृजन का काव्य को ब्रहम का स्तर प्रदान किया है
3. भारतीय परम्परा में कविता को ब्रहमानंद सहोदर एव वेद्यान्तर स्पर्शशून्यता से जोड़ा गया है
4. इलियट के परम्परा सिद्धान्त का प्रभाव है
5. भाषा तत्समी है (अविभाज्य।
6. द्वंद्व-मुक्त है

6/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

4. निम्नलिखित गद्यांशों की संदर्भ-सहित व्याख्या (लगभग 150 शब्दों में) प्रस्तुत करते हुए उनके रचनात्मक-सौंदर्य का परिचय दीजिये: 10 × 5 = 50

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(क) विपन्नता के इस अथाह सागर में सोहाग ही वह तृण था, जिसे पकड़े हुए वह सागर को पार कर रही थी। इन असंगत शब्दों ने यथार्थ के निकट होने पर भी, मानों झटका देकर उसके हाथ से वह तिनके का सहारा छीन लेना चाहा, बल्कि यथार्थ के निकट होने के कारण ही उनमें इतनी वेदना-शक्ति आ गई थी। काना कहने से काने को जो दु:ख होता है, वह क्या दो आँखों वाले आदमी को हो सकता है?

संदर्भ: उपरोक्त पंक्तियाँ मुंशी प्रेमचन्द के उपन्यास गोदान से ली गयी है।

प्रसंग व व्याख्या: इन पंक्तियों में प्रेमचंद धनियाँ की मन:स्थिति का वर्णन कर रहे है जो होरी के कथन 'साठ की नौबत न आएगी धनियाँ।' से उत्पन्न हुयी है। वे कहते है कि अभावग्रस्त जीवन में एक नारी के लिए उसका पति ही एक आशा है जिसके सहारे वह मिलकर जीवन के लिए लड़ती है। ऐसा विचार धनिया के मन में आने पर, कि होरी नहीं रहे, वह अत्यन्त कुपित हो जाती है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

जीवन के कठोर सत्य को सामने देखकर जो दुःख होता है वह असह्य है।

सौंदर्य:

1. यथार्थ का कठोर व नग्न रूप चित्रित किया गया है।

2. मनोविज्ञान को देखने की व्यावहारिक दृष्टि प्रेमचंद के पास है।

3. मुहावरे का सटीक प्रयोग (काना कहने - - - -)

4. भाषा - हिन्दुस्तानी शैली

5

और बेहतर बनाएँ।

5½/10

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

5. निम्नलिखित गद्यांशों की संदर्भ-सहित व्याख्या (लगभग 150 शब्दों में) प्रस्तुत करते हुए उनके रचनात्मक-सौंदर्य का परिचय दीजिये: 10 × 5 = 50

(क) तो क्या ये मेरे मोटे होने के दिन हैं? मोटे वह होते हैं जिन्हें न रिन का सोच होता है न इज्जत का। इस ज़माने में मोटा होना बेहयाई है। सौ को दुबला करके तब एक मोटा होता है। ऐसे मोटेपन में क्या सुख? सुख तो जब है कि सभी मोटे हों।

संदर्भ: उपरोक्त गद्यांश उपन्यास सम्राट 'मुंशी प्रेमचन्द' की भारतीय कृषक जीवन की गाथा कृति 'गोदान' से ली गयी है।

प्रसंग एवं व्याख्या: इन पंक्तियों में होरी अपने भाई हीरा के लौट आने पर कहता है कि ये हमारे दुर्दिन है। ऐसी परिस्थितियों मे कोई मोटा नहीं होता। मजार बिरादरी व महाजन का ऐसा चूषक यन्त्र हमारे चतुर्दिक है कि वह हमारा रक्त चूस रहा है। मोटा तो वह होगा जो इन बंधनो से मुक्त है। वही व्यक्ति सुखी है जो शोषक है लेकिन इस व्यवस्था में सुख वास्तविक नहीं वास्तविक सुख तो सबके कल्याण में है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

सौंदर्य:

1. प्रेमचन्द इसके माध्यम से समतावादी समाज की स्थापना का आदर्श सामने रख रहे हैं।
2. मार्क्सवाद इसी प्रकार के समाज की स्थापना चाहता है।
3. शोषण कारी व्यवस्था के उपकरणों की सटीक पहचान की गयी है। बिरादरी-धर्म से जुड़ी इज्जत तथा साहूकारी सामंती व्यवस्था मे शोषण के प्रभावी उपकरण है।
4. भाषा पात्रानुकूल है। प्रश्न → लि
5. सूत्र शैली (सौ को दुकना ---)

6/10

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright - Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) नारी के प्रति अनुराग से, उसके आश्रय की कामना से ही पुरुष उसे अधीन रख कर उसे आत्म-निर्भर नहीं रहने देता। नारी प्रकृति के विधान से नहीं, समाज के विधान से भोग्य है। प्रकृति में और समाज में भी स्त्री तथा पुरुष अन्योन्याश्रय हैं।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संदर्भ: उपरोक्त पंक्तियाँ मार्क्सवादी उपन्यासकार यशपाल की कृति दिव्या से ली गयी है।

प्रसंग एवं व्याख्या: इन पंक्तियों में यशपाल की नारी दृष्टि मुखर हुयी है। मारिश के वक्तव्य के माध्यम से वह नारी के शोषण का कारण तथा उसकी वांछनीय स्थिति का विश्लेषण कर रहे है।

यशपाल कहते हैं कि पुरुष नारी से प्रेम करता है और उसमे भावनात्मक आश्रय पाता है इसी कारण वह उसे अपना अधीनस्थ बनाना चाहता है। प्रकृति ने तो नारी को पुरुष के ही समान बनाया। किन्तु पुरुष केन्द्रित सामाजिक व्यवस्था ने नारी को पुरुष के अधीन बना दिया।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

सौंदर्य :

1. मार्क्सवादी दृष्टि परिलक्षित होती है जो सामाजिक व्यवस्था को शोषण को संस्थानिक बनाने का उपकरण मानती है।

2. नारीवादी विचारकों का भी यही मानना है। 'सिमोन द बुआ' इत्यादि नारीवादी चिंतकों ने सामाजिक व्यवस्था पर प्रश्न खड़े किये हैं।

3 - भाषा पात्रानुकूल है तत्सम। (चार्वाक दर्शन का प्रतिनिधि)

4 - वाक्य विधान गठा हुआ है।

5 - संवाद शैली

6/10

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ग) अहंकारमूलक आत्मवाद का खण्डन करके गौतम ने विश्वात्मवाद को नष्ट नहीं किया। यदि वैसा करते तो इतनी करुणा की क्या आवश्यकता थी? उपनिषदों के नेति-नेति से ही गौतम का अनात्मवाद पूर्ण है। यह प्राचीन महर्षियों का कथित सिद्धांत, मध्यमा प्रतिपदा के नाम से, संसार में प्रचारित हुआ। व्यक्तिरूप में आत्मा के सदृश कुछ नहीं है। वह एक सुधार था, उसके लिये रक्तपात क्यों?

संदर्भ: प्रस्तुत पंक्तियाँ नाटककार जयशंकर प्रसाद की रचना स्कंदगुप्त से ली गयी है।

प्रसंग एवं व्याख्या: ये पंक्तियाँ नाटक के अंतिम अंक से ली गयी हैं जहाँ हिन्दू-बौद्ध संघर्ष के वातावरण में वर्ग समन्वय का संदेश प्रसाद दे रहे हैं।

इन पंक्तियों में प्रसाद कहते हैं कि भगवान बुद्ध का संदेश उपनिषदों के विरुद्ध नहीं वरन उससे संगत है। बौद्ध धर्म का माध्यमिक मार्ग उपनिषदों के नेति-नेति (ऐसा नहीं है - ऐसा भी नहीं है) से ही निहित है। बौद्धधर्म का अनात्मवाद मनुष्य के अहंकार को नष्ट करने के लिए प्रतिपादित किया गया।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

जब दोनों सम्प्रदाय एक दूसरे के समीप हैं तो फिर संघर्ष और रक्तपात का क्या कारण विद्यमान है?

सोर्ध :

1. धर्मनिरपेक्षता व वर्ग समन्वय के मूल्य की स्थापना की गयी है
2. मध्यमा प्रतिपदा वस्तुत: मध्यमार्गी ही है जो समन्वय की चेतना से युक्त है।
3. वर्तमान में जब धार्मिक संघर्ष चरम पर हैं, ये पंक्तियाँ अपनी प्रासंगिकता को सिद्ध कर रही है
4. भाषा तत्सम है।
5. संवाद एकालापी तथा लंबा है।

6/10

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(घ) आज तक के वे भीतरी उबाल और बाहरी दबाव के बीच टुकड़े-टुकड़े होकर हमेशा घुटने ही टेकते आये हैं। हर बार दिनेश को लड़ाई के मैदान में ले तो ज़रूर गए हैं, पर जैसे ही गोलियाँ चली हैं, उसे वहीं छोड़कर भाग आये हैं- अकेला, निहत्था। वह गोलियों की बौछार से लहूलुहान होता रहा है और ये खुद एक असह्य अपराध बोध से। नहीं, और नहीं; अब तो वे चाहें तो भी शायद ऐसा नहीं कर सकते।

संदर्भ: उपरोक्त पंक्तियाँ राजनीतिक उपन्यास 'महाभोज' से ली गयी है जिसकी रचनाकार 'मन्नू भंडारी' है।

प्रसंग एवं व्याख्या: इन पंक्तियों में मन्नू भंडारी जी ने पुलिस कप्तान के गहरे अन्तर्द्वन्द्व को व्याख्यायित किया है। वे कहती हैं कि जब भी हम उदात्त उद्देश्य के लिए समर में उतरते हैं तो अपने दो व्यक्तित्व को लेकर जाते हैं। एक तो वह जो नैतिक मन होता है जो लोक कल्याण के लिए लड़ने की प्रेरणा देता है। दूसरा, स्वार्थपरक मन जो अपने स्वार्थों को सोचता है। पुलिस कप्तान अभी तक स्वार्थ के कारण नैतिक मन को दबाते हैं किन्तु अब अन्तर्द्वन्द्व इतना गहरा

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

गया है कि उसकी पीड़ा भव बाधा भी दबा नहीं सकती।

सौंदर्य:

1- मध्यवर्गीय बुद्धिजीवी का आत्म संघर्ष चित्रित किया गया है।

2- मुक्तिबोध के यहाँ भी यही समस्या है।

3. प्रसाद ने भी इच्छा ज्ञान व क्रिया के मध्य विषमता को विश्व की समस्या माना।

4- फ्रायड के मनोविश्लेषण का प्रभाव भी है।

5. माया - पातकुशल अन्तर्द्वन्द्व को दिनेश के प्रतीक के माध्यम से सटीक चित्रित।

6/10

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) पंडित ने रस्सी निकाली। उसका फंदा बनाकर मुरदे के पैर में डाला और फंदे को खींचकर कस दिया। अभी कुछ-कुछ धुँधला-सा था। पंडित जी ने रस्सी पकड़कर लाश को घसीटना शुरू किया और गाँव के बाहर घसीट ले गए। वहाँ से आकर तुरंत स्नान किया, दुर्गापाठ पढ़ा और घर में गंगाजल छिड़का।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संदर्भ: उपरोक्त पंक्तियाँ नयी कहानियों के संकलन एकदुनिया समानान्तर में संकलित कहानी प्रेत मुक्ति से ली गयी है।

प्रसंग व व्याख्या: इन पंक्तियों में जातीय जड़ता तथा दूषित सामाजिक मानको पर व्यंग्य किया गया है। समाज के तथाकथित उच्च वर्गों के लिए सामाजिक विधान किस प्रकार उनके पक्ष में झुके है इस पर व्यंग किया गया है। ~~एक तरफ~~

सौंदर्य: 1. व्यंग्य शैली

4/10

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation